# समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संरचनावाद II

## (Sociological Theory: Structuralism II)

**डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय**

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- स्ट्रॉस एक फ्रेंच मानवशास्त्री हैं तथा इन्हें 'संरचनात्मक मानवशास्त्र' का जनक माना जाता है।
- स्ट्रॉस के अनुसार संरचना, तर्क विधि से निर्मित संरचना है जो मनुष्य के मस्तिष्क में स्थित होती है। यह स्वयं अनुभव से परे है लेकिन अनुभव की व्याख्या का मानसिक साँचा है।
- चूंकि साँचे बदलते नहीं, अतः मानसिक संरचनाएँ अपरिवर्तनीय होती हैं।
- स्ट्रॉस ने सामाजिक यथार्थ के दो स्तर बताए हैं –
  - जिसके अनुसार अभी तक मानवशास्त्रियों ने ऊपरी स्तर की संरचना अर्थात् संस्थाओं तथा व्यवहार की व्याख्या की है।
  - जबकि गहराई के स्तर की खोज करना, प्रतीकात्मक अर्थबोध की संरचनाओं की खोज करना है।
- स्ट्रॉस का तर्क है कि यदि व्यवहारिक तथा सामाजिक प्रतिमानों का गहराई से अध्ययन कर सरलीकृत किया जाए, तो अर्थबोध की ऐसी संरचनाएँ मिलेंगी, जो समस्त मानव जाति की संरचना मानी जा सकती है।

**लेवी स्ट्रॉस का संरचनावाद मानसिक प्रक्रिया है जो समस्त मानव जाति तथा संस्कृति में सार्वभौमिक है।**

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- स्ट्रॉस का संरचनावाद बहुत कुछ भाषा वैज्ञानिक संरचनावाद के समान है।
- भाषा वास्तव में अर्थबोध के संप्रेषण का माध्यम है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अर्थबोध का सृजन करता है, साथ ही वस्तुओं का प्रक्षेपण भी करता है तथा ऐसा व्याकरण के नियमों के अनुसार करता है। व्याकरण का नियम वह 'संरचना' है जो वाक्य रचना में अंतर्निहित है।
- इसी तरह सामाजिक व्यवहारों के पीछे संरचनाएँ होती हैं, वह वाक्यों की रचना करने वाले नियमों के समान ही सामाजिक व्यवहार को रूपांतरित करने वाली संरचना होती है।
- स्ट्रॉस *'The Elementary Structures of Kinship'* पुस्तक में चचेरे–ममेरे भाई–बहनों की विवाह पद्धति की चर्चा करते हैं। स्ट्रॉस अपने सिद्धांत का आधार दुर्खीम से लेते है। उनका सिद्धांत संरचनात्मक विनिमय के नाम से जाना जाता है।
- स्ट्रॉस ने संरचना के तीन आधार बताए हैं –
  - संरचना वह है जिसका निर्माण सामाजिक संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा होता है।
  - समस्त संरचनाओं के अपने मॉडल होते हैं।
  - संरचना वह है जो मनुष्य के मस्तिष्क द्वारा निर्मित होती है। नातेदारी, गोत्र, मिथक आदि की संरचनाएँ मनुष्य के मस्तिष्क द्वारा निर्मित हैं।

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- स्ट्रॉस का संरचनावाद आदिम समाज व्यवस्था है।
- स्ट्रॉस ने मानव प्रकृति या व्यवहार के विषय में तीन नियम बताए हैं –
  - सभी संबंधों में व्यक्तियों को कुछ न कुछ लागत देनी पड़ती है, लेकिन इस लागत के आर्थिक व मनोवैज्ञानिक कारणों के अतिरिक्त समाज की भी कुछ लागत होती है। स्ट्रॉस इस लागत को समाज की परंपराएँ, नियम, उपनियम व रीति–रिवाज तथा मूल्य कहते हैं। यदि व्यक्ति इनका पालन नहीं करता, तो समाज उन्हें दंडित करता है, उसकी निंदा की जाती है।
  - व्यक्ति के कार्यों/ व्यवहार पर समाज का स्वामित्व तथा नियंत्रण होता है, अतः इनका पालन करना व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है।
  - विनिमय व्यवहार में पारस्परिकता होती है। इस पारस्परिकता को बनाए रखने का श्रेय समाज का होता है।
- स्ट्रॉस द्वारा बताए गए इन तीन नियमों का उद्देश्य व्यक्ति तथा समाज के बीच एकता स्थापित करना है।

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- स्ट्रॉस के संरचना सिद्धांत का मूल आधार नातेदारी संरचना का विश्लेषण है।
- नातेदारी पर अध्ययन करके निष्कर्ष के आधार पर स्ट्रॉस लिखते हैं हमारे विचारों की प्रक्रियाएँ ही हमें मनुष्य बनती हैं।
- मानव के दैनिक जीवन के व्यवसाय, रीति–रिवाज, परंपराओं आदि के पीछे मनुष्य की बौद्धिक गतिविधियां हैं अर्थात् सामाजिक जीवन का उद्गम बौद्धिक गतिविधियां होती हैं। कुछ सामाजिक तत्व सार्वभौमिक रूप से देखने को मिलते हैं तथा यह सार्वभौमिक तत्व ही संरचना है।
- स्ट्रॉस का तर्क है कि व्यवहार के पीछे जो संरचना होती है, वह नहीं बदलती। व्यक्ति कितना भी तकनीकी रूप से विकसित हो जाए, वह भी मनुष्य की मानसिक संरचनाओं की उपज होगा।
- यद्यपि स्ट्रॉस का अध्ययन आदिम समाजों तक ही सीमित था, फिर भी उनका मत था कि यदि हम आदिम समाज की मानसिक संरचनाओं को समझ लें, तो आधुनिक समाज के विकसित मानव व्यवहारों को समझा जा सकता है।

**स्ट्रॉस के अनुसार, *'संरचनावाद में संचार की प्रणाली, नातेदारी प्रणाली तथा जीवनसाथी के आदान–प्रदान के रूप में सामाजिक घटनाओं की एक विस्तृत शृंखला शामिल है।'***

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- भाषा, नातेदारी संबंध तथा मिथक मानसिक संरचनाएँ हैं तथा गहराई के स्तर पर हैं। इन संरचनाओं के अनुसार जो व्यवहार होते हैं, वे ऊपरी स्तर के व्यवहार को बतलाते हैं।
- ऊपरी स्तर के सामाजिक व्यवहारों की व्याख्या करने के लिए स्ट्रॉस ने संरचनात्मक ध्वनि विज्ञान के नियम द्विभाजी विपरीतता (रोमन जैकब्सन) का उपयोग किया है। इन जोड़ो में से किसी एक का अर्थ दूसरे के बिना नहीं समझा जा सकता।
- स्ट्रॉस कहते हैं कि लिंग भेद तथा विनिमय से समाज का आरंभ हुआ है। स्त्रियों का विभाजन दो वर्गों में किया गया– 'बहन' समाज की तथा 'पत्नी' समाज की। स्ट्रॉस का मत है कि स्त्रियों के विनिमय से ही 'संस्कृति' प्रारंभ हुई।
- देवी–देवताओं से संबंधित पौराणिक गाथाओं को मिथक कहते हैं। यह मिथक (रोलैण्ड बाथ) समुदाय की समस्याओं का नैतिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। नायक का आचरण समाज में आदर्श प्रारूप बन जाता है। स्ट्रॉस कहते हैं कि मिथक वास्तव में भाषा का स्वरूप है।

# संरचनावाद: लेवी स्ट्रॉस

- स्ट्रॉस ने मिथकों से चार प्रकार के संबंधों को प्रस्तुत किया –
  - रक्त संबंधों को आवश्यकता से अधिक महत्व देना
  - रक्त संबंधों को आवश्यकता से कम महत्व देना
  - दानव संहार
  - मानव की उत्पत्ति का आदिम मूल स्रोत
- आदिमानव के अचेतन मन की स्थिति का ज्ञान मिथक की व्याख्या करने से होता है।
- जादू, टोटमवाद, मिथक की व्याख्या इसी विचारधारा के अनुसार होती है।

# क्लाउड लेवी स्ट्रॉस: प्रमुख कृतियाँ व अवधारणाएँ

- *The Elementary Structures of Kinship*, 1948
- नारी विनिमय के दो प्रकार –
  - सीमित विनिमय
  - सामान्य विनिमय
- *The Savage Mind*, 1962
- मिथक तथा टोटमवाद का अध्ययन
- *The Raw and The Cooked,* 1964
- भोजन की संरचना का विश्लेषण किया। भोजन में प्रचलित कच्चा व पक्का खाना को स्ट्रॉस ने दोहरे प्रतिरोध के रूप में व्यक्त किया।
- स्ट्रॉस सामाजिक संरचना को एक प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दो तरह के प्रतिमान –
  - मैकेनिकल यांत्रिक प्रतिमान: समाज स्वीकृत नियमों का पालन
  - संख्यात्मक प्रतिमान: सामाजिक नियमों में अंतर

**प्रमुख कृतियाँ**

- *The Elementary Structures of Kinship*, 1948
- *Introduction to the Work of Marcel Mauss*, 1950
- *Tristes Tropiques*, 1955
- *Structural Anthropology*, 1958
- *The Savage Mind*, 1962
- *Totemism Today*, 1962
- *The Structural Study of Myths*, 1963
- *The Raw and The Cooked,* 1964
- *Introduction to the Science of Mythology*, 4 Vol. 1964–71
- *The Origin of Table Manners*, 1968
- *The Naked Man*, 1971

## Next Class:

**समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद I**

**(Sociological Theory: Conflict Theory I)**